समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

लोक कल्याण सेतु

रजि. समाचार पत्र

• प्रकाशन दिनांक : १५ जून २०२६ • वर्ष : २९ • अंक : १२ (निरंतर अंक : ३४८) • भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

पूज्य संत
श्री आशारामजी बापू

गुरुपूर्णिमा विशेषांक

गुरुपूर्णिमा : २९ जुलाई

सत्यस्वरूप आत्मा के सुख की तरफ जाने का संदेश देनेवाली पूनम का नाम गुरुपूनम है । गुरु माने भारी, बड़ा । बड़े-बड़े राजे-महाराजे राजपाट छोड़कर गुरुओं के द्वार पर ज्ञान पाने के लिए सेवा करते थे । राजा दशरथ मुनि वसिष्ठजी के आश्रम में सेवा करते थे । राजा दिलीप मुनि वसिष्ठजी की गाय चराते थे । - पूज्य बापूजी

हृदय की पुकार

- पूज्य बापूजी

भगवान की प्रीति, भक्ति पाने के लिए उसे प्यार करते जाना, उसे प्रार्थना करते जाना : 'हे परमेश्वर ! तेरी भक्ति का दान दे दे। हे मीरा के कन्हैया ! हे मेरे आत्मदेव ! हे परमेश्वर ! हे नानक के अकाल पुरुष ! हे कबीर के अव्यक्त ! हे नामदेव के विट्ठल ! हे शंकराचार्य के अद्वैत ब्रह्म ! हे मीरा के गिरधर गोपाल ! हे शबरी के राम ! हमारे दिल को तेरी प्रीति में पिघला दे प्रभु ! लोभी मन पैसों के लिए पिघलता है, मोही मन परिवार के लिए रोता-हँसता है, अहंकारी मन पद के लिए छटपटाता है। ऐसे ही हम भगवान ! तेरे लिए छटपटायें।

बार बार बर मागउँ हरषि देहु श्रीरंग। पद सरोज अनपायनी भगति सदा सतसंग॥

(रामचरित. उ.कां. : १४)

हे निराधारों के आधार ! कलियुग के दोषों ने हमें घेर लिया है। कलियुग के प्रभाव से हमारा चित्त मुक्त कर देना मेरे मालिक ! हे परमेश्वर ! हमें तेरी भक्ति, तेरा बल, तेरा साहस दे। हमारे भीतर के शत्रुओं से जूझते-जूझते तो हम फिसलते जाते हैं और बाहर भी विघ्न-बाधाएँ हमें दबा रहे हैं। हे निराधारों के आधार ! तू हर भक्त के जीवन में अपना बल और ओज दे, साहस और शक्ति दे। जीवन की शाम हो जाय उसके पहले हम जीवनदाता ! तुझमें आराम पा लें। कुटुम्बी हमें श्मशान में ले जायें उसके पहले किन्हीं ब्रह्मज्ञानी का हाथ पकड़ा देना। जो मेरा मन राम-तत्त्व (परमात्म-तत्त्व) में ले जायें ऐसे किन्हीं संत का सहारा दे देना। आँखों की रोशनी कम हो जाय उसके पहले अंदर की आँख खोलनेवाला सत्संग दिया करना प्रभु ! कान बहरे हो जायें उसके पहले हरिकथा, जो जन्म-मरण की व्यथा मिटानेवाली है, उसमें प्रीति दे देना प्रभु ! हे भक्तों के भगवान ! हे ब्रह्मवेत्ताओं के निजस्वरूप ! हमारे हृदय को पिघला दे तेरी प्रेमाभक्ति में, हमारे चित्त को चुरा ले तेरी चेतना में। हे दयानिधे ! दिन-दिन आयुष्य क्षीण हो रहा है, समय बीता जा रहा है, मौत न जाने किस समय गला दबोच दे। मौत आकर गला दबोच दे उसके पहले हम तेरी अमरता का आस्वादन कर लें, जहाँ मौत नहीं पहुँचती उस आत्मस्वरूप में गोता मार लें तो कितना अच्छा होगा ! बुढ़ापे में पैर दर्द करने लग जायें, पैरों की शक्ति क्षीण हो जाय उसके पहले हमारी आत्मशक्ति की अनुभूति की ओर हम चल दें तो कितना अच्छा होगा ! शरीर शिथिल होने लग जाय, बुद्धि बुढ़ापे की मंदता की खबर देने लग जाय उसके पहले बुद्धि को ऋत का अनुभव करा के, सत् का अनुभव करा के 'ऋतम्भरा प्रज्ञा' बना लें ऐसी हमें शक्ति, स्मृति और प्रेरणा देना प्रभु !'

रजि. समाचार पत्र

लोक कल्याण सेतु

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २९ अंक : १२

निरंतर अंक : ३४८ आवधिकता : मासिक

प्रकाशन दिनांक : १५ जून २०२६ मूल्य : ₹ ४.५०

पृष्ठ संख्या : २८ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

सम्पर्क पता :

'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)

फोन : (०७९) ६१२१०७३९

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ४५	(१) पंचवार्षिक :	US $ ५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ८०	(२) आजीवन :	US $ १२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १९५		
(४) आजीवन :	₹ ४७५		

❊ विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग ❊

अनादि — रोज सुबह ९.३० व रात्रि १०.३० बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI — रोज रात्रि १० बजे

Asharamji Bapu | सेवाकार्य भी Asharamji Ashram | Mangalmay Digital

यूट्यूब चैनल्स

❊ 'अनादि' चैनल टाटा प्ले (चैनल नं. ११६१), एयरटेल (चैनल नं. ३७९) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है। ❊ 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है।

लोक कल्याण सेतु ई-मैगजीन के रूप में भी पढ़ सकते है। ई-मैगजीन अथवा हार्ड कॉपी के सदस्य बनने के लिए क्लीक करो...

www.lokkalyansetu.org

● लोक कल्याण सेतु रुद्राक्ष मनका योजना : ●

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

इस अंक में...

● गुरुपूर्णिमा : सत्यस्वरूप आत्मा के सुख की तरफ...

कवर स्टोरी गुरुपूर्णिमा मनुष्य-जीवन को सुव्यवस्थित करनेवाली, लघु को ऊँचा बनानेवाली पूर्णिमा है। लघु वस्तुओं की आसक्ति व प्रीति जीव को तुच्छ करती है और परमात्मा की प्रीति व ज्ञान जीव को महान बना देता है... ४

● आओ सभी गुरु गुण गावें – संत भोले बाबा..... ६

● वैज्ञानिक भी स्वीकार रहे ईश्वर का अस्तित्व.....७

● समर्पण की जीत..... ९

● उनके हृदय खिल गये हैं – गुरु रामदासजी.....९

● जिसकी गवाही को बनाया आधार,
वह खुद ही मुजरिम निकला ! – रवीश राय..... ११

● एकाग्रता और गुरुभक्ति का प्रताप..... १३

● संन्यास माने क्या ? – स्वामी अखंडानंदजी.....१५

● शिष्य की घड़ाई के लिए गुरु की युक्ति..... १६

● संत की शक्ति ने करोड़ों जीवन बदले, धर्म बचाया.....१८

● ...गुणकारी औषधि भी है अजवायन.....१९

● सुर्खियों में..... २१

● ...और छँट गया निराशा का अंधकार ! – पूनम कन्नोजिया.. २१

● आगामी पुण्यदायी तिथियाँ व योग.....२२

● सद्गुरु मेरा सूरमा..... २३

● गुरुभक्ति अनपढ़ को भी अद्भुत बना देती है.....२५

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम | प्रकाशक : राकेशसिंह आर. चंदेल | मुद्रक : विवेक सिंह चौहान | प्रकाशन-स्थल : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) | मुद्रण-स्थल : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५ | सम्पादक : रणवीर सिंह चौधरी

Email: lokkalyansetu@gmail.com, ashramindia@ashram.org Website: www.lokkalyansetu.org, www.ashram.org, www.asharamjibapu.org

Subject to Ahmedabad Jurisdiction.

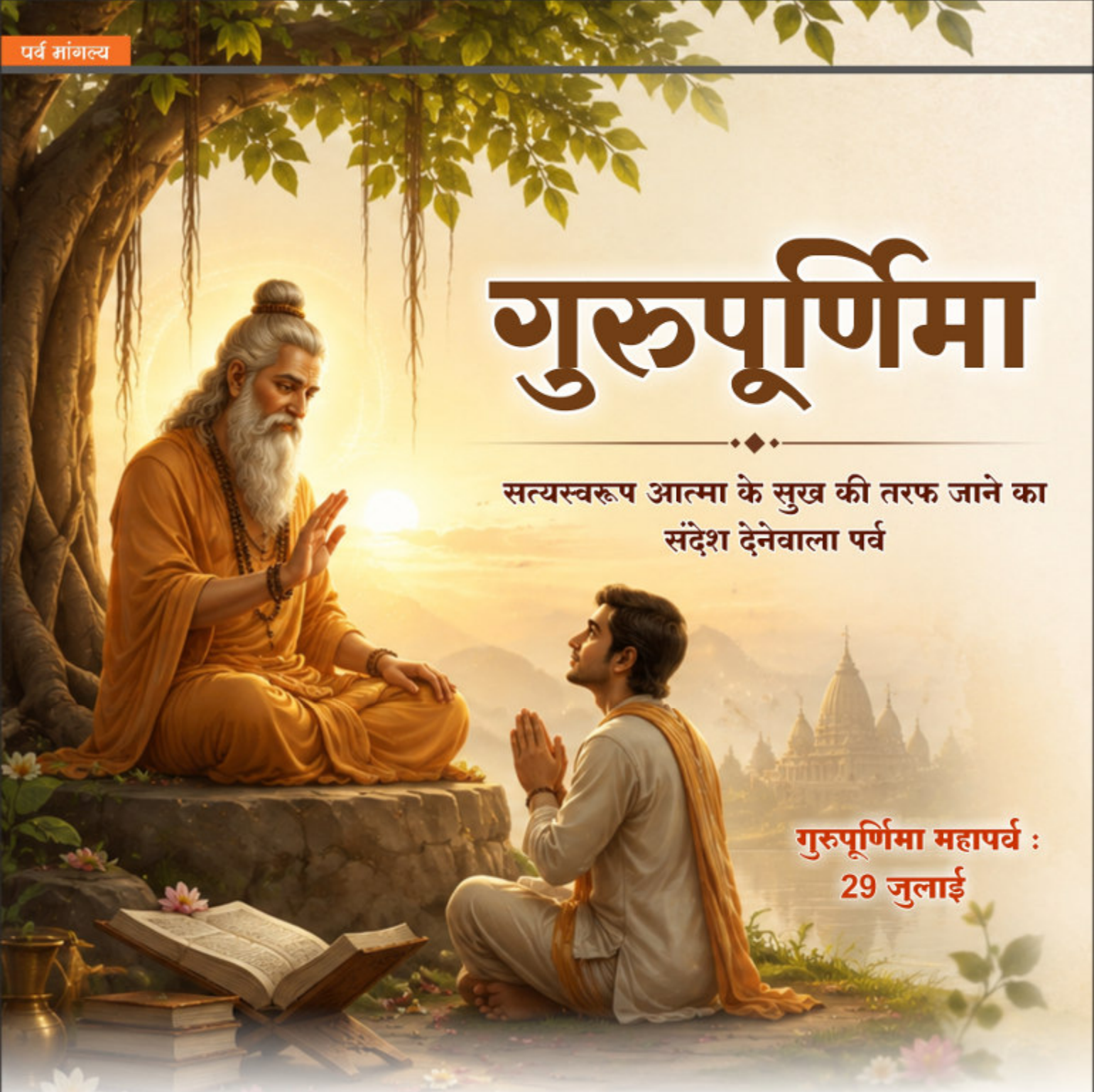

गुरुपूर्णिमा

सत्यस्वरूप आत्मा के सुख की तरफ जाने का संदेश देनेवाला पर्व

गुरुपूर्णिमा महापर्व :
29 जुलाई

गुरुपूर्णिमा मनुष्य-जीवन को सुव्यवस्थित करनेवाली, लघु को ऊँचा बनानेवाली पूर्णिमा है। लघु वस्तुओं की आसक्ति व प्रीति जीव को तुच्छ करती है और परमात्मा की प्रीति व ज्ञान जीव को महान बना देता है। गुरु माने भारी, बड़ा। छोटे-मोटे दुःख-सुख में, मान-अपमान में, जीवन-मृत्यु में चलित न हों ऐसे अचल पद में जो प्रतिष्ठित हैं और दूसरों को अचल पद में प्रतिष्ठित करने की क्षमता रखते हैं वे 'गुरु' हैं।

२९ जुलाई को गुरुपूर्णिमा महापर्व है। इसकी महिमा के बारे में पूज्य बापूजी के सत्संग वचनामृत में आता है :

गुरुपूर्णिमा मनुष्य-जीवन को सुव्यवस्थित करनेवाली, लघु को ऊँचा बनानेवाली पूर्णिमा है। लघु वस्तुओं की आसक्ति व प्रीति जीव को तुच्छ करती है और परमात्मा की प्रीति व ज्ञान जीव को महान बना देता है।

वैज्ञानिक भी स्वीकार रहे

ईश्वर का अस्तित्व

'जिस प्रकार कोई भी रेखा बिना आरम्भ बिंदु के नहीं हो सकती उसी प्रकार यह सृष्टि भी बिना किसी मूल कारण के अस्तित्व में नहीं आ सकती थी। अवश्य ही कोई ऐसी सत्ता है जो शक्ति का वास्तविक स्रोत है, जिसके कारण सम्पूर्ण सृष्टि अस्तित्व में आयी। वह है कालातीत, सर्वशक्तिमान और प्रज्ञा-सम्पन्न ईश्वर।'

सूर्य नित्य उगता है और अस्त होता है, चन्द्रमा की कलाएँ क्रमशः घटती-बढ़ती रहती हैं, ऋतुएँ नियत क्रम में आती-जाती हैं, असंख्य तारे, ग्रह-नक्षत्र अनवरत गतिमान रहते हैं... क्या कभी आपने विचार किया है कि यह सब इतने सुव्यवस्थित ढंग से कैसे होता है ? इसी प्रश्न का उत्तर खोजते-खोजते विश्व के विभिन्न वैज्ञानिक इस निष्कर्ष पर पहुँचे कि अवश्य ही इस समस्त ब्रह्मांड का कोई नियामक एवं संचालनकर्ता है। **दक्षिण कोरिया के वैज्ञानिक यंग हून किम** ने कुछ समय पूर्व ज्यामिति के एक सरल सिद्धांत के आधार पर प्रतिपादित किया कि 'जिस प्रकार कोई भी रेखा बिना आरम्भ बिंदु के नहीं हो सकती उसी प्रकार यह सृष्टि भी बिना किसी मूल कारण के अस्तित्व में नहीं आ सकती थी। अवश्य ही कोई

ब्लैकमेलिंग की एक संगीन साजिश का पर्दाफाश ! लेकिन न कोई ब्रेकिंग न्यूज, न खबरिया चैनलों पर कोई बहस... बस, सोशल मीडिया पर हलकी-फुलकी कवरेज ! १८ अप्रैल २०२६। पानीपत पुलिस ने महेन्द्र चावला, उसके भाई देवेन्द्र चावला और भतीजे राम को लाखों रुपयों की योजनाबद्ध और संगठित वसूली, धोखाधड़ी, धमकियाँ देना, झूठी गवाही, अदालत को गुमराह करना – इन गम्भीर गुनाहों के तहत गिरफ्तार किया।

एफ.आई.आर. के अनुसार महेन्द्र चावला के साथ सनौली खुर्द (पानीपत) के वर्तमान सरपंच संजय त्यागी, भूतपूर्व सरपंच प्रियंका शर्मा तथा सुरेन्द्र शर्मा के कई प्रकार के मुकदमे एवं झगड़े लम्बे समय से चल रहे थे। पैसों की हवस में डूबे महेन्द्र चावला ने बड़ी चालाकी से कुछ मध्यस्थों के जरिये सरपंचों को विश्वास दिलाया कि वह अदालत के समक्ष उनके हक में गवाही दे देगा। १ मार्च को उसने इसके लिए सरपंचों से ७० लाख रुपये ऐंठ लिये। एक बार २ मार्च को उनके हक में गवाही दी। लेकिन फिर उसने अपना असली चेहरा दिखाया। अगली पेशी पर ५ मार्च को अदालत में उपस्थित होने से बचने के लिए फर्जी मेडिकल प्रमाण-पत्र दाखिल कर दिया। उसके मकान और दुकान, जो न्यायालय के आदेश के अनुसार टूटने के कगार पर थे, उन्हें बचाने के लिए उसने संजय त्यागी पर पंचायत में अपने पक्ष में प्रस्ताव पारित करने के लिए दबाव बनाया। वह धमकी देने लगा कि ''१९ मार्च को मेरी गवाही की अंतिम तारीख है। अगर तब तक यह प्रस्ताव पारित नहीं हुआ तो कोर्ट में सबकी झूठी गवाही दे दूँगा।''

१७ मार्च को प्रस्ताव पारित हो गया परंतु महेन्द्र चावला की लोभ की आग नहीं बुझी – १८ मार्च को ८० लाख रुपये की अतिरिक्त माँग की। पैसे नहीं मिलने पर अपनी पिछली गवाही से पलट गया और सबके खिलाफ झूठी गवाही दे दी।

ॐ एकाग्रता और गुरुभक्ति का प्रताप ॐ

उसने जंगल में जाकर गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति बनायी मिट्टी-गारे की और रोज उसके सामने बैठता, आँख की पुतली नहीं हिले ऐसे एकटक देखता। इस प्रकार गुरुमूर्ति के सामने बैठने से गुरु-शक्तियाँ, मानसिक शक्तियाँ जागृत होती हैं और विद्याएँ भी अंदर से प्रकट होती हैं। एकलव्य एकटक देखता, ध्यान करता गुरुमूर्ति देखते-देखते उनसे आज्ञा लेता और गुरु-प्रेरणा पाकर धनुर्विद्या का अभ्यास करता।

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

एकलव्य के पिता का नाम था हिरण्यधनु। वे श्रद्धालु थे और यह मानते थे कि 'एक बार मनुष्य कुछ करने का ठान ले और उस कार्य में कोई रुकावट आये तो अंदर से विकल्प न करे, 'मुझे यह करना है' ऐसे दृढ़ रहे तो वह जो करना चाहे कर लेगा।'

गुरु द्रोणाचार्य ने एकलव्य को गुरुकुल में धनुर्विद्या सिखाने से मना कर दिया था। एकलव्य में पिता के संस्कार पड़े थे। उसने जंगल में जाकर गुरु द्रोणाचार्य की मूर्ति बनायी मिट्टी-गारे की और रोज उसके सामने बैठता, आँख की पुतली नहीं हिले ऐसे एकटक देखता। इस प्रकार गुरुमूर्ति के सामने बैठने से गुरु-शक्तियाँ, मानसिक शक्तियाँ जागृत होती हैं और विद्याएँ भी अंदर से प्रकट होती हैं। एकलव्य एकटक देखता, ध्यान करता -

ध्यानमूलं गुरोर्मूर्तिः पूजामूलं गुरोः पदम्।
मन्त्रमूलं गुरोर्वाक्यं मोक्षमूलं गुरोः कृपा॥

गुरुमूर्ति देखते-देखते उनसे आज्ञा लेता और गुरु-प्रेरणा पाकर धनुर्विद्या का अभ्यास करता।

शिष्य की घड़ाई के लिए

गुरु की युक्ति

धोबी की प्रत्येक चेष्टा कपड़े में से मैल निकालकर उसे उज्ज्वल करने की होती है। कुम्हार की प्रत्येक चेष्टा घड़े को पक्का बनाने की होती है। उसी प्रकार गुरु की प्रत्येक चेष्टा साधक को सिद्ध बनाने की होती है, शिष्य को गुरु बनाने की होती है, जीव को शिव बनाने की होती है।'' ऐसे-ऐसे इस देश में महापुरुष हो गये !

(पूज्य बापूजी के सत्संग से)

(पिछले अंक में हमने पढ़ा कि गुरु द्वारा दी गयी सेवा के तहत राजा कचरा फेंकने जा रहा था तो गुरु के निर्देशानुसार एक अनजान व्यक्ति ने उसे टक्कर मार दी, जिससे राजा कुपित हो गया। कुछ दिनों बाद उसकी कसौटी करने के लिए गुरु ने दूसरे व्यक्ति को टक्कर मारने भेजा तो राजा भीतर से तो खिन्न हुआ पर बाहर से कुछ न बोला। अब आगे...)

गुरु ने तीसरा व्यक्ति भेजा कुछ दिनों के बाद। पहली टक्कर से दूसरी टक्कर जोर की थी, दूसरी से तीसरी और जोरों की थी। इस बार राजा ने कुछ नहीं कहा, आँखों से भी कुछ न कहा परंतु ललाट पर नाराजगी थी थोड़ी-थोड़ी कि 'अच्छा नहीं करते लोग, मुझे जानते नहीं लोग । लोग बड़े बेवकूफ हैं।'

लेकिन बेवकूफ तो तू है कि सदियों से तेरे साथ परमात्मा है, तू उसको नहीं जानता है तो तेरे को लोग क्या जानेंगे ? तू अपनी बेवकूफी नहीं जानता

केवल मसाला नहीं,

गुणकारी औषधि भी है

अजवायन

पाचक | कृमिनाशक | वातशामक

थोड़ी-सी मात्रा में ही उपयोग करने पर भोजन को स्वादिष्ट व सुपाच्य बनानेवाली अजवायन घर की मसालेदानी का महत्त्वपूर्ण घटक है। यह उष्ण, तीक्ष्ण, कफ-वातशामक व पित्तवर्धक है । यह जठराग्नि को बढ़ा के भोजन में अरुचि, अजीर्ण, पेट की वायु, दर्द तथा कब्ज में शीघ्र राहत दिलाती है। पुरानी खाँसी, दमा, पीठ, कमर व जोड़ों के दर्द में तथा प्रसूति के पश्चात् की देखभाल में यह विशेष प्रभावकारक है। यह कृमिनाशक, संक्रमण-निरोधी (antiseptic), दुर्गंधनाशक व सड़न को दूर करनेवाली भी है । यह वर्षा व शीत ऋतु में विशेष उपयुक्त है। कष्ट से होनेवाले मासिक धर्म में व प्रसूति के पश्चात् इसका उपयोग परम्परागत रूप से प्रचलित है।

औषधीय प्रयोग : (१) वायु के कारण पेट फूलना, खुलकर डकार नहीं आना, घबराहट तथा

सद्गुरु मेरा सूरमा

- पूज्य बापूजी

परमात्मा जन्म देता है तो जीव के रूप में और माँ-बाप जन्म देते हैं तो देहधारी के रूप में परंतु गुरु हमें अपने आत्मस्वरूप, शाश्वत स्वरूप में जगा देते हैं, परमात्मा बना देते हैं। राजा जनक को कई जन्मों में पिता मिले, कई जन्मों में माताएँ मिलीं, पुत्र भी मिले होंगे परंतु एक बार अष्टावक्रजी मिल गये तो जनक अमर हो गये। ऐसे अपने अमरत्व में जगानेवाले महापुरुषों का नाम है सद्गुरु !

भगवान शिवजी पार्वतीजी से कहते हैं :

मंत्रराजमिदं देवि गुरुरित्यक्षरद्वयम् ।
स्मृतिवेदपुराणानां सारमेव न संशयः ॥

'हे देवी ! 'गुरु' यह दो अक्षरवाला मंत्र सब मंत्रों में राजा है, श्रेष्ठ है। स्मृतियाँ, वेद और पुराणों का वह सार ही है, इसमें संशय नहीं है।'

गुरु माने बड़ा। गुरु शिखर अर्थात् बड़ा शिखर। गुरु का मतलब जो हिले नहीं । हजार-हजार आँधियाँ आयें, हजार-हजार हर्ष-शोक हों, हजार-हजार उपद्रव आयें-जायें फिर भी जो उनसे प्रभावित न हो उसका नाम है गुरु।

दूसरा अर्थ है - 'गु' माने अंधकार और 'रु' माने प्रकाश। अज्ञान-अंधकार को छुड़ाकर ज्ञान-प्रकाश की तरफ जो ले जाते हैं, उन महापुरुषों को भी हम 'गुरु' कहते हैं।

संत कबीरजी ने कहा :

सद्गुरु मेरा सूरमा, करे शब्द की चोट ।
मारे गोला प्रेम का, हरे भरम की कोट ॥

जो अपने स्वरूप में अचल हैं, जो हमें संसार-समुद्र से निकालकर परमात्मा से मिला दें, जिनका एक हाथ परमात्मा में है और दूसरा हाथ हमारी परिस्थितियों में है, उन महापुरुषों का नाम गुरु है।

आसुमल को यदि गुरुजी नहीं मिलते तो खाँड़ की बोरियाँ बेचता या तो तेल के डिब्बे रवाना

पूरे परिवार के उत्तम स्वास्थ्य के लिए **सेहत और स्वाद का संगम**

आँवला कैंडी
(मीठी व नमकीन)

पुष्कर आश्रम गौशाला से जुड़ी जंगल की शुद्ध भूमि, जो गोधूलि, गौ-खाद, अन्य शुद्ध खाद, अत्यंत शुद्ध जल से सम्पन्न है, उसमें उपजे ताजे आँवलों से तैयार की गयी यह कैंडी स्वास्थ्य एवं साधना में सहायक है। यह स्वादिष्ट, शक्तिप्रद एवं विटामिन 'सी' से भरपूर है। बच्चों को बाजारू टॉफियों से बचाने हेतु यह स्वास्थ्यवर्धक उत्तम विकल्प है।

₹ १००
४०० ग्राम

दीर्घायु व यौवन प्रदाता, विविध रोगों में लाभदायी

आँवला रस

यह वीर्यवर्धक, त्रिदोषशामक व गर्मीशामक है। इसके सेवन से आँखों व पेशाब की जलन, अम्लपित्त (hyperacidity), श्वेतप्रदर, रक्तप्रदर, बवासीर आदि पित्तजन्य अनेक विकारों में लाभ होता है।

₹ ७५
७०० मि.ली.

रक्त-शुद्धिकर, पित्तशामक

नीम अर्क

यह दाद, खाज, खुजली, कील, मुँहासे तथा पुराने त्वचा-विकारों में अत्यंत लाभदायी है। यह उत्तम कृमिनाशक एवं दाह व पित्त शामक है तथा बालों को झड़ने से रोकता है। पीलिया, रक्ताल्पता (anaemia), रक्तपित्त, अम्लपित्त (hyperacidity), उलटी, प्रमेह, विसर्प (herpes), रक्तप्रदर, गर्भाशय शोथ, खूनी बवासीर तथा यकृत (liver) व आँखों के रोगों में लाभदायक है।

₹ ३०
२१० मि.ली.

श्रेष्ठ बल्य रसायन

अश्वगंधा चूर्ण व टेबलेट

ये सप्तधातु, विशेषकर मांस व वीर्य वर्धक एवं बल व पुष्टि वर्धक श्रेष्ठ रसायन हैं। ये स्नायुओं व मांसपेशियों को ताकत देते हैं, वात-शमन व कदवृद्धि करते हैं। धातु की कमजोरी, शारीरिक दुर्बलता आदि के लिए ये रामबाण औषधियाँ हैं।

₹ ८०
१०० ग्राम

₹ ६०
७५ ग्राम

जोड़ों के दर्द के लिए उत्तम

स्पेशल मालिश तेल

यह तेल जोड़ों के दर्द के लिए अत्यंत उपयुक्त है। अंदरूनी चोट, पैर में मोच आना आदि में हलके हाथ से मालिश करके गर्म कपड़े से सेंकने पर शीघ्र लाभ होता है।

₹ ५०
१०० मि.ली.

रक्तवाहिनियों को खोलने में विशेष लाभदायी

हृदय सुधा सिरप

यह हृदय की तरफ जानेवालीं तमाम रक्तवाहिनियों को खोलने में मदद करता है। यदि आप हृदयरोग से पीड़ित हैं और डॉक्टर ने बायपास सर्जरी करवाने के लिए कहा है तो उससे पहले इस सिरप का प्रयोग अवश्य करें।

₹ २७०
६०० ग्राम

हृदय-संबंधी समस्याओं में उपयोगी

हृदयामृत टेबलेट

यह हृदय-संबंधी समस्याओं, जैसे - हार्ट ब्लॉकेज, हृदय की कमजोरी व धड़कन का अनियमित होना, हृदय का दर्द या गति अनियमित होना आदि में लाभदायी है।

₹ १५०
१०० गोलियाँ

उत्तम कृमिनाशक

कोष्ठशुद्धि कल्प
पेट की गोली

पेचिश, आँव आना, भूख न लगना आदि कमजोर पाचन की समस्याओं, कृमि आदि में यह लाभदायी है। ५०% से अधिक बच्चों के पेट में कृमि पाये जाते हैं अतः बच्चों हेतु यह विशेष हितकर है। कुछ दिन तक इसके नियमित सेवन से कृमि नष्ट होकर कृमिजन्य शय्यामूत्र, लार टपकना, तुतलाना, कमजोरी, वजन न बढ़ना आदि तकलीफें दूर हो जाती हैं।

₹ ७०
५० ग्राम

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पार्सल द्वारा सामग्रीप्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : ७३५१११३७५२. ई-मेल : contact@ashramestore.com

योग व उच्च संस्कार शिक्षा कार्यक्रमों एवं विद्यार्थी उज्ज्वल भविष्य निर्माण शिविरों से नवपीढ़ी का चरित्र-निर्माण

RNI No. 66693/97
RNP No. GAMC-1253-A/2024-2026
Issued by SSPO's-Ahmedabad City Dn.
Valid up-to 31-12-2026
WPP No. 02/24-26
(Issued by CPMG UK. valid up-to 31-12-2026)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

उझानी, जि. बदायूँ (उ.प्र.)

पलवल (हरि.)

अमलीडीह, जि. रायपुर (छ.ग.)

कटक (ओड़िशा)

आगरा

सिरसागंज, जि. फिरोजाबाद (उ.प्र.)

तिगाँव, जि. फरीदाबाद (हरि.)

बल्लभगढ़ (हरि.)

इगलास, जि. अलीगढ़ (उ.प्र.)

तिरिडा, जि. गंजाम (ओड़िशा)

सादाबाद, जि. हाथरस (उ.प्र.)

बराड़ा, जि. अम्बाला (हरि.)

ढोरीठेमा, जि. बालोद (छ.ग.)

विरमगाम, जि. अहमदाबाद (गुज.)

पटनागढ़, जि. बलांगीर (ओड़िशा)

विद्यार्थियों में हुआ सुसंस्कारप्रद नोटबुकों का निःशुल्क वितरण

रेवाड़ी (हरि.)

रामसिंहपुरा, जि. अलवर (राज.)

होशियारपुर (पंजाब)

गोंदिया (महा.)

राहगीरों को शरबत आदि पिलाकर पाया आत्मसंतोष

कुरुद, जि. धमतरी (छ.ग.)

वनियाम्बाडी (तमिलनाडु)

वेरावल (गुज.)

हैदराबाद

मुड़िया, जि. राजनांदगाँव (छ.ग.)

जामनगर (गुज.)

कलबुर्गी (कर्नाटक)

कलम्ब, जि. यवतमाल (महा.)

लोक कल्याण सेतु की सदस्यता दिलानेवाले पुण्यात्मा

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/seva देखें।
आश्रम, समितियाँ एवं साधक-परिवार अपने सेवाकार्यों की तस्वीरें sewa@ashram.org पर ई-मेल करें।

आश्रम के मासिक प्रकाशन की सदस्यता हेतु स्कैन करें : लोक कल्याण सेतु | ऋषि प्रसाद | ऋषि दर्शन

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **मुद्रक** : विवेक सिंह चौहान **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी